मगधराज

सेनिय बिम्बिसार

विपश्यना विशोधन विन्यास

मगधराज
सेनिय बिम्बिसार

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

मगधराज सेनिय बिम्बिसार

पुस्तक कोडः **H63**

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

आवरण पृष्ठः ग्लोबल विपश्यना पगोडा के आर्ट गैलरी से लिया गया है।

प्रथम संस्करण : दिसंबर २०१०
पुनर्मुद्रण : सितंबर २०१४, दिसंबर २०२४

मूल्य : रु.
Price: Rs.

ISBN 978-81-7414-320-4

प्रकाशक:
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: ०२५५३-२४४९९८, २४३५५३, २४४०७६
२४४०८६, २४४१४४, २४४४४०
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रक:
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

मगधराज सेनिय बिम्बिसार

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय

मगध का भाग्य जागा १

सेनिय बिम्बिसार १

बिम्बिसार का विवाह १

निर्बाध भोग २

बोधिसत्त्व सिद्धार्थ से प्रथम मिलन ३

बिम्बिसार को भगवान का दर्शन-लाभ ५

अभिलाषाएं पूर्ण हुईं ७

वेळुवन का दान ७

राजघराने की धर्म-चेतना ९

रूपगर्विता खेमा ९

राजकुमार अभय १४

अभयमाता पद्मावती १८

विमलकोण्डञ्ञ २१

अम्बपाली नगरशोभिनी धर्मशोभिनी बनी २२

राजकुमार सीलवा २६

अभया २६

पुरोहित-पुत्री सोमा २७

राजकुमार चुन्द तथा राजकुमारी चुन्दी २८

अनदेखे मित्र..३०

महाराज तिस्स को अनमोल भेंट ३०

पुक्कुसाति को धर्म-रत्न उपहार ३२

पुक्कुसाति का गृहत्याग ३७

हुई मित्रता फलवती ४४

कोमलकाय सोण ५०

प्रेतलोक में पड़े रिश्तेदार ५१

ब्याधिपि दुक्खा ५५
स्वयं का भगंदर ५५
श्रेष्ठी का सिरदर्द ५५
बनारस का श्रेष्ठि-पुत्र ५७
राजा पज्जोत का पांडुरोग ५८
इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं ६१
आरामपाल के आम ६१
सुमन मालाकार के फूल ६३
वेसाली का अकाल ६५
बिम्बिसार का विनय में योगदान ७२
दुतिय पाराजिक ७२
योद्धा-प्रव्रज्या निषेध ७५
एकत्रित हो धर्मकथा कहने की अनुमति ७६
पांच प्रकार के फल खाने की अनुमति ७७
भगवान द्वारा आराम स्वीकार करने की अनुमति . . . ७८
विविध प्रकरण ७९
अनाथपिण्डिक का निमंत्रण ७९
स्थविर की कुटी ७९
राजा पसेनदि द्वारा बिम्बिसार से एक श्रेष्ठी की मांग . ८०
कौन राजा अधिक शक्तिशाली ८०
पुण्यवंत कुम्भघोसक ८१
सच्चा सुखी कौन ८३
जोतिक का महल ८६
सत्पुरुष बिम्बिसार ८९
कोसलदेवी को दोहद ८९
बिम्बिसार की हत्या ९०
पुत्र-स्नेह ९२
त्रिरत्न-श्रद्धालु बिम्बिसार ९२

विपश्यना साधना केंद्र ९५

प्रकाशकीय

संबोधि प्राप्त करने से लेकर महापरिनिर्वाण तक जीवन के ४५ वर्षों में भगवान गोतम बुद्ध ने हजारों सदुपदेश दिये। इनसे प्रभावित होकर केवल संन्यासी ही नहीं बल्कि समाज के हर संप्रदाय के, हर मान्यता के, हर पेशे के, हर वर्ग के, गृहस्थ भगवान बुद्ध की शिक्षा के प्रति खिंचे चले आये। उनके बताये गये मार्ग पर चल कर मंगल-लाभी हुए।

चाहे मगधनरेश बिम्बिसार हो या कोसलनरेश पसेनदि, चाहे महारानी मल्लिका हो या महारानी खेमा, चाहे अभय राजकुमार हो या बोधि राजकुमार, चाहे सेनापति बंधुल हो या सेनापति सिंह, चाहे राजमहिषी सामावती हो या दासी खुज्जुत्तरा, चाहे राजपुरोहित-पुत्र कच्चायन हो या राजवैद्य जीवक, चाहे दानवीर श्रेष्ठी अनाथपिण्डिक हो या भिखमंगा कोढ़ी सुप्पबुद्ध, चाहे जटिल कस्सप बंधु हों या परिव्राजक दारुचीरिय, चाहे सद्गृहिणी विसाखा हो या नगरवधू अम्बपाली, चाहे ब्राह्मण महाकस्सप हो या भंगी सुनीत, चाहे ब्राह्मण सारिपुत्त हो या चांडालपुत्र सोपाक, चाहे सदाचारी सीलवा हो या हत्यारा अङ्गुलिमाल - भगवान के संपर्क में जो आया, जिसने भी धर्म-गंगा में डुबकी लगायी, जिसने भी विपश्यना-साधना का अभ्यास किया, वही बदल गया, वही सुधर गया, वही दुःख-मुक्त हो गया।

इस पुस्तिका में मगधराज सेनिय बिम्बिसार का जीवनवृत्तांत प्रस्तुत किया जा रहा है।

———————

महाराज भाति तथा रानी बिम्बि के पुत्र बिम्बिसार ने पंद्रह वर्ष की अवस्था में मगध राज्य की बागडोर संभाली। अल्प समय में ही शस्त्रविद्या में निष्णात और सैन्य-संचालन में निपुण बिम्बिसार अङ्ग राज्य को भी अपने अधीन कर सेनिय, याने सेनानी, बिम्बिसार कहलाने लगा।

बिम्बिसार का विवाह कोसल की राजकुमारी कोसलदेवी से हुआ। उसकी काम-पिपासा निरंतर बढ़ती रहती थी। वह जब कभी किसी राज्य की देवांगनाओं-सदृश राजकुमारियों के रूप की चर्चा सुनता, तब उन्हें प्राप्त करने के लिए आतुर हो उठता। राजकुमारी खेमा के रूप-सौंदर्य के बारे में पता चला

तब उसके साथ विवाह कर लिया। जनपदकल्याणी अम्बपाली तथा पद्मावती के रूप-सौंदर्य के बारे में सुना तो वह उनसे भी मिलने जा पहुँचा और उनके शरीर-सौंदर्य का उपभोग किया।

अपनी पुण्य-पारमिताओं के फलस्वरूप बिम्बिसार का बोधिसत्त्व सिद्धार्थ से जब प्रथम मिलन हुआ तब उनकी भौतिक काया से आकृष्ट होकर उसने उन्हें अपने राजसी-ऐश्वर्य में भागीदार बनाने का प्रस्ताव रखा। बोधिसत्त्व द्वारा बिम्बिसार के प्रस्ताव को ठुकराये जाने पर बिम्बिसार ने उनसे निवेदन किया कि जब वे संबोधि प्राप्त कर लें तब उसे धर्मोपदेश देने के लिए राजगह अवश्य पधारें।

छः वर्ष बीतते बीतते गोतम सम्यक-संबुद्ध बने। मगधराज बिम्बिसार को दिया गया वचन निभाने के लिए भगवान राजगह पधारे। मगधराज भगवान के दर्शनार्थ पहुँचा। अनेक गृहपतियों के साथ भगवान से धर्मदेशना सुन बिम्बिसार सोतापत्तिफल में प्रतिष्ठित हुआ। इसके फलस्वरूप अधोगति की ओर ले जाने वाले भवकर्मसंस्कारों से उसे मुक्ति मिली। श्रद्धाविभोर हो मगधराज बिम्बिसार ने भगवान तथा भिक्षुसंघ के एकांतवास के लिए वेळुवन दान में दिया।

अब बिम्बिसार पहले वाला बिम्बिसार नहीं रह गया। वह पहले की भांति कामवासनाओं का गुलाम नहीं रह गया। सद्गृहस्थ की सारी पारिवारिक जिम्मेदारियों और राज्यशासन के सारे उत्तरदायित्वों को पूर्ववत भलीभांति निभाते हुए उसमें बहुत बड़ा बदलाव आ गया। उसे अपने बदले हुए स्वभाव को देखकर बहुत प्रसन्नता थी। भगवान की विद्या से लाभान्वित होकर जो सुख-शांति उसे प्राप्त हुई, वह चाहता था कि परिवार के अन्य लोग भी उस मुक्तिदायिनी विद्या का लाभ उठाएं। महारानी खेमा, राजकुमार अभय, अभयमाता पद्मावती, विमलकोण्डञ्ञ, नगरशोभिनी अम्बपाली, राजकुमार सीलवा, पुरोहित-पुत्री सोमा, राजकुमार चुन्द तथा राजकुमार चुन्दी भी भगवान के संपर्क में आये। भगवान की कल्याणकारी विद्या से लाभान्वित हो, इन सबने विमुक्ति-रस चखा। मगधराज बिम्बिसार की धर्ममयी प्रेरणा महाराज तिस्स, पुक्कुसाति, सोण तथा अनेकों की मुक्ति में भी सहायक सिद्ध हुई।

मगधराज बिम्बिसार जब भगंदर रोग से पीड़ित हुआ तब राजवैद्य जीवक ने उसे शीघ्र ही इस रोग से मुक्ति दिलायी। महाराज बिम्बिसार अपने परिवार तथा अपनी प्रजा को भवरोग से मुक्ति दिलाने के लिए भगवान की शिक्षा का अनुसरण करने के लिए प्रेरित तो करता ही था, साथ ही साथ अपनी प्रजा को शारीरिक रोगों से मुक्ति दिलाने का भी प्रयास किया करता था। राजवैद्य जीवक के माध्यम से राजगह के श्रेष्ठी को सिरदर्द, बनारस के श्रेष्ठि-पुत्र को मक्खचिका खेलते हुए अँतड़ी में गांठ पड़ जाने और राजा पज्जोत को पांडुरोग से मुक्ति दिलायी।

मगधराज बिम्बिसार त्रिरत्न (बुद्ध, धर्म तथा संघ) के प्रति अत्यंत श्रद्धालु था। सुमन मालाकार ने राजा को अर्पित किये जाने वाले पुष्पों से जब भगवान की अर्चना की तब मगधराज ने तनिक भी क्रोध नहीं जगाया।

उन दिनों नदी तट पर किसी महत्त्वपूर्ण मेहमान की अगवानी करनी होती तो भी और उसे बिदाई देनी होती तो भी गले-गले तक पानी में उतर कर ससम्मान ऐसा किया जाता था। जब भगवान ने वेसाली में उत्पन्न तीन भयों - दुर्भिक्ष, अमानुषी उपद्रवों तथा रोगों के निवारण के लिए उस नगरी के लिए प्रस्थान किया तब महाराज बिम्बिसार ने यही किया। इस यात्रा में भगवान को रंचमात्र भी कष्ट न हो, इसका उसने पूरा-पूरा ध्यान रखा। भगवान के प्रति उसके मन में असीम आदरभाव था। कासी, मगध और अङ्ग देश का एकच्छत्र शक्तिशाली सम्राट होते हुए भी, जिनसे उसे अनमोल धर्मरत्न मिला था उन भगवान के प्रति वह अत्यंत विनम्रभाव से झुक गया था। उसका सारा अहं पिघल गया था। धर्म के प्रति और धर्मराजा के प्रति उसके मन में अमित कल्याणी श्रद्धा हिलोरें मार रही थी। यह असीम श्रद्धा उसके लिए अप्रत्याशित रूप से मंगल फलदायिनी थी।

महाराज बिम्बिसार के सुझाव पर भगवान ने अनेक शिक्षापदों को प्रज्ञापित किया। भिक्षु धनिय कुम्भकारपुत्त द्वारा राज्य सुरक्षा में रखी लकड़ियों को बिना राजाज्ञा के अपने लिए उपयोग में लेने पर दुतिय पाराजिक शिक्षापद को प्रज्ञापित किया गया। भिक्षुओं द्वारा राजसैनिकों को प्रव्रज्या देने पर भगवान ने इसे निषिद्ध ठहराया। महाराज बिम्बिसार के सुझाव पर भगवान ने भिक्षुओं को चतुर्दशी, पूर्णमासी और पक्ष की अष्टमी को एकत्रित हो, धर्मकथा

कहने की अनुमति प्रदान की। भिक्षुओं को पांच प्रकार के फल खाने-संबंधी शिक्षापद की नींव रखी गयी। भगवान के राजगह में प्रथम आगमन पर महाराज बिम्बिसार ने भगवान तथा भिक्षुसंघ को अपना उद्यान वेळुवन दान में दिया, तब भगवान ने भिक्षुओं को उद्यान स्वीकार करने संबंधी शिक्षापद को प्रज्ञापित किया। इस प्रकार महाराज बिम्बिसार ने विनय के अनेक शिक्षापदों को प्रज्ञापित करवाने की अहम भूमिका निभायी।

त्रिरत्न के संपर्क में आने पर महाराज बिम्बिसार के सद्गुणों में और भी अधिक निखार आने लगा। सावत्थी के श्रेष्ठी अनाथपिण्डिक ने जब भगवान को भिक्षुसंघ-सहित संघदान के लिए आमंत्रित किया तब महाराज ने श्रेष्ठी की आर्थिक मदद के लिए प्रस्ताव भेजा। वह राजगह में आने वाले आगंतुक भिक्षुओं का समुचित सेवा-सत्कार किया करता। राजा पसेनदि द्वारा बिम्बिसार से एक श्रेष्ठी की मांग करने पर उसके साथ धनञ्चय श्रेष्ठी को उसके राज्य की शोभा बढ़ाने के लिए भेजा। कुम्भघोसक की ईमानदारी, निष्ठा को जानकर उसे अनेक प्रकार से पुरस्कृत किया। जोतिक की धन-संपदा, ऐश्वर्य-वैभव को देखकर महाराज बिम्बिसार के मन में तनिक भी ईर्ष्या उत्पन्न नहीं हुई। इसके विपरीत उसने जोतिक के वैभव को देखकर उसकी प्रशंसा ही की।

मगधराज बिम्बिसार को अपनी संतान के प्रति असीम स्नेह था। बिम्बिसार का पुत्र अजातसत्तु जब रानी के गर्भ में था तब रानी को दोहद उत्पन्न हुआ - 'मैं महाराज की दायीं भुजा का खून पीऊं।' मगधनरेश को जब रानी के इस दोहद का पता चला तब उसने दायीं भुजा को सोने की छुरी से कटवाकर उससे खून निकलवाकर रानी के दोहद की पूर्त्ति की। ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की कि महाराज का अपना पुत्र ही उनकी हत्या करेगा। महारानी ने यह जान अपने गर्भ को गिराने के अनेक प्रयत्न किये। पर सत्पुरुष बिम्बिसार ने महारानी को ऐसा करने से रोका।

पुत्र अजातसत्तु ने राज्यसत्ता हथियाने के लिए अपने पिता की हत्या करने का प्रयास किया। राज्य नियमों के अनुसार उसे मृत्युदंड दिया जाना था। परंतु पिता के मन में वात्सल्यभाव उमड़ा। उसने उस दोषी को छुड़वा दिया। महाराज बिम्बिसार ने शीघ्र ही अजातसत्तु को राजगद्दी संभला कर स्वयं अवकाश ग्रहण कर लिया। परंतु अजातसत्तु को इससे भी संतुष्टि नहीं हुई।

देवदत्त की सिद्धियों के वशीभूत अजातसत्तु ने अपने पिता को कारावास में डाल निराहार रखा। अनेक प्रकार से पुत्र पिता को मारने का उपक्रम करता रहा। अजातसत्तु ने राज्य के नाइयों को पिता की पगथली को चीर कर नमक भरवा, अंगारों से जलाने का आदेश दिया।

एक ओर क्षुधा की पीड़ा, दूसरी ओर पांव की असह्य वेदना! विपश्यी बिम्बिसार इसे धर्म के बल पर सहन करता रहा। उसने अपने अन्यायी पुत्र के प्रति रंचमात्र भी द्वेष नहीं जगाया। वह यही समझता रहा कि यह सब मेरे ही किसी पूर्व दुष्कर्म का फल है। पुत्र तो माध्यम बन गया है। उसके प्रति वह जीवन के अंतिम क्षण तक मैत्री ही जगाता रहा।

बिम्बिसार आदर्श विपश्यी था। वह अपने मन को रंचमात्र भी विचलित कैसे होने देता?

यथिन्दखीलो पथविस्सितो सिया, चतुब्भि वातेहि असम्पकम्पियो।
तथूपमं सप्पुरिसं वदामि, यो अरियसच्चानि अवेच्च पस्सति॥

-खुद्दकपाठ ६.८, रतनसुत्त

[जिस प्रकार पृथ्वी में दृढ़तापूर्वक गड़ा हुआ इंद्रकील (नगरद्वार-स्तंभ) चारों ओर के प्रबल पवनप्रवाह से भी प्रकंपित नहीं होता, उसी प्रकार के व्यक्ति को मैं सत्पुरुष कहता हूं जिसने चारों आर्यसत्यों का स्पष्टरूप से साक्षात्कार कर लिया है।]

बिम्बिसार ने विपश्यना साधना द्वारा चारों आर्यसत्यों का स्पष्टरूप से साक्षात्कार कर लिया था, इसी कारण मरणांतक असह्य पीड़ा में भी उसका चित्त अविचल रहा। समतामयी मैत्री में अटल रहा। “अहो बुद्ध! अहो धर्म! अहो संघ!” ऐसा अनुस्मरण करते हुए उसने अपने प्राण छोड़े।

इस समूचे प्रकरण का सार भी यही है कि जो कोई त्रिरत्न (बुद्ध, धर्म, संघ) के प्रति अपूर्व निष्ठा रखते हुए जीवनयापन करेगा वह भव-संसरण से मुक्ति पाने की आशा कर सकता है।

विपश्यना विशोधन विन्यास